**पर्यावरण, साहित्य और हिन्दी सिनेमा**

**डॉ. पुनीत बिसारिया\***

**पर्यावरण और भारतीय साहित्यिक आर्ष ग्रंथ प्रायः परस्पर अंतर्ग्रथित रहे हैं| साहित्य के प्राचीनतम स्वरूपों तथा मन रंजन के रूप में लोकप्रिय नाट्य विधा की कृतियों तथा इनके सार्वजनिक मंचनों में पर्यावरण संरक्षण की चिंता चिर काल से स्पष्ट परिलक्षित होती आई है| प्रकृति की उर्वरा शक्ति की प्रतीक मातृ देवी की उपासना हड़प्पा अथवा सिंधु घाटी की सभ्यता के निवासियों द्वारा की जाती थी| वस्तुतः वृक्ष, पर्वत, जल, वायु, पवन, अग्नि, पृथ्वी आदि प्राकृतिक उपदानों की आराधना करने वाला भारतीय समाज वैदिक काल से ही पर्यावरण के प्रति पर्याप्त सचेष्ट रहा है| वेदों में ‘गिरियः ते पर्वता हिमवंतोsरण्यम तं पृथ्वीस्योनमस्तु’ अर्थात स्वच्छ जल, वायु, अग्नि तथा पृथ्वी इन देवों को मैं नमन करता हूँ, कहकर इनके संरक्षण को नमनीय कहा गया है| तदनुरूप नाटकों में भी पर्यावरण की सुध ली गई है| महाकवि कालिदास ‘अभिज्ञान शाकुंतल’ नाटक के मंगलाचरण में पर्यावरण संरक्षण की मंगल कामना करते हुए कहते हैं-**

**या सृष्टिः स्रस्टु राद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री**

**ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषय गुणा या स्थितः व्याप्यविश्वं|**

**सर्व बीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवंतः**

**प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वः ताभिरष्टाभिरीशः|**

**अर्थात जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, यज्ञ, हवि एवं यज्ञकर्ता, ये परमात्मा शिव की प्रत्यक्ष अष्ट मूर्तियाँ हैं| ऐसे प्रत्यक्ष अष्ट मूर्तियों वाले शिव सबकी रक्षा करें|**

**भास कृत ‘स्वप्नवासवदत्तम’, कालिदास कृत ‘विक्रमोर्वशीयम’ और ‘मालविकाग्निमित्रं’, शूद्रक कृत ‘मृच्छकटिकम’, श्रीहर्ष कृत ‘रत्नावली’, ‘प्रियदर्शिका’ और ‘नागानंद’, भवभूति कृत ‘मालती माधव’, ‘उत्तर रामचरितं’ और ‘महावीर चरितं’, राजशेखर कृत ‘कर्पूरमंजरी’ आदि नाटकों में भी यथास्थान पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई है|**

**हिन्दी के नाटकों मे भी यह परंपरा अविच्छिन्न रूप से चली आई है| भारतेन्दु कृत ‘चंद्रावली’ एवं ‘प्रेम योगिनी’, जयशंकर प्रसाद कृत ‘ध्रुवस्वामिनी’, मोहन राकेश कृत ‘आषाढ़ का एक दिन’ आदि नाटकों में इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है|**

**चूंकि आधुनिक युग में नाटक के उत्तराधिकारी के रूप में पारसी थिएटर से होते हुए सिनेमा हमारे समक्ष उपस्थित है| अतः दाय के तौर पर सिनेमा ने भी अल्प मात्रा में ही सही, किन्तु पर्यावरण की चिंता की है| यहाँ यः तथ्य भी विचारणीय है कि पांचवें दशक से आठवें दशक के बीच बनी अधिकांश फिल्मों में राजा साहबों , राय बहादुरों, जमींदारों एवं धनाढ्यों के महलों, हवेलियों और बंगलों की बैठकों को जानवरों की खालों में भूसा भरकर सजाने तथा दीवारों पर मृत जानवरों के सर टाँगने और नायकों के शिकार के शौक को महिमामंडित करने जैसे दृश्य एवं वृत्तान्त सहज स्वाभाविक रूप मे पेश किए जाते थे| फलतः हिन्दी सिनेमा में पर्यावरण विषयक फिल्मों की संख्या अपेक्षाकृत कम रही है, परंतु जितनी भी फिल्में हैं, उनका संदेश स्पष्ट और प्रभावशाली रहा है|**

**हिन्दी सिनेमा के इतिहास पर नज़र दौड़ाएं तो पाते हैं कि सन 1946 में आई चेतन आनंद की फिल्म ‘नीचा नगर’ में जल प्रदूषण अर्थात दूषित पानी पीने से गरीब लोगों के बीमार पड़ने की समस्या को दर्शाया गया है| सन 1951 में प्रदर्शित फिल्म ‘संसार’ में नायक आगा नायिका से कहते हैं ‘लखनऊ चलो अब रानी बंबई का बिगड़ा पानी’ और इस प्रकार फिल्म आज से 70 बरस पहले ही बंबई में फैल रहे जल प्रदूषण की चर्चा हँसी–हँसी में ही कर देती है|**

**विमल रॉय के निर्देशन में बलराज साहनी के अविस्मरणीय अभिनय से सजी ‘दो बीघा जमीन’ फिल्म सन 1953 में आई थी, जिसमें गरीब किसान के खेत खेत को धोखे से हड़पकर उस पर मिल खड़ी करने तथा गरीब किसान द्वारा अपनी जमीन को बचाने की हर संभव कोशिश करने का करुण कथानक बुना गया है| इसी वर्ष आई राज कपूर की त्रासद फिल्म ‘आह’ में वायु प्रदूषण की चर्चा आई है| शहर की प्रदूषित हवा के कारण नायक की माँ की टीबी से मौत हो जाती है, अतः अपने पुत्र को शहर की प्रदूषित हवा से दूर रखने के लिए नायक राज कपूर के धनाढ्य पिता उन्हें गाँव मे रहने के लिए भेज देते हैं| कालांतर में इस कथानक का उपयोग कई फिल्मों में दोहराया गया|**

**सन 1957 में आजादी की दसवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में निर्देशक महबूब खान फिल्म ‘मदर इंडिया’ लेकर आते हैं, जिसमें पर्यावरण की कथा भी अंतर्निहित है| फिल्म बताती है कि प्रकृति की विनाश लीला के आगे मनुष्य लाचार है और सूखे के कारण किस प्रकार एक परिवार तबाही की कगार पर पहुँच जाता है लेकिन नायिका राधा (नरगिस) की दृढ़ इच्छा शक्ति उसे विजयी बनाती है| सन 1965 में आई यश चोपड़ा निर्देशित फिल्म ‘वक्त’ में भूकंप की विभीषिका वर्णित की गई है कि किस प्रकार भूकंप के कारण एक हँसता-खेलता धनाढ्य परिवार तबाह हो जाता है| इसी साल आई देवानंद की सुपर हिट फिल्म ‘गाइड’ में भी सूखे की समस्या से पीड़ित ग्रामवासियों का अंकन है|**

**भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की प्रेरणा से हरित क्रांति को ध्यान में रखकर फिल्मकार मनोज कुमार सन 1967 में ‘उपकार’ फिल्म लेकर आते हैं, जिसमें नायक का धरती के प्रति असीम प्रेम वर्णित हुआ है| सन 1971 में आई फिल्म ‘हाथी मेरे साथी’ में वन्य जीवों विशेषकर हाथियों को मनुष्य एवं पर्यावरण का सच्चा साथी दिखाया गया है| इस फिल्म को वास्तव में पूर्णतः पर्यावरण संरक्षण को समर्पित पहली हिन्दी फिल्म माना जा सकता है| सन 1971 में ही ख्वाजा अहमद अब्बास के निर्देशन में बनी फिल्म ‘दो बूंद पानी’ राजस्थान के अकाल एवं वहाँ के गांवों में महिलाओं द्वारा काफी दूर से पानी भरकर लाने की समस्या पर आधारित थी, जिसमें बांध बनने से इस समस्या का समाधान बताया गया था|**

**‘जानवर और इंसान’ फिल्म सन 1972 में प्रदर्शित हुई थी, जिसमें नायक शेखर (शशि कपूर) एक बाघ को घायल कर देते हैं, इसके बाद उस बाघ और नायक की जद्दोजहद पर यह फिल्म आगे बढ़ती है| इसी साल आई मनोज कुमार अभिनीत फिल्म ‘शोर’ ध्वनि प्रदूषण से जुड़ती है|**

**सन 1976 में प्रदर्शित फिल्म ‘माँ’ में जानवरों की अपने नवजात शिशुओं के प्रति अथाह ममता वर्णित हुई है| इस फिल्म में दिखाया गया है कि नायक धर्मेन्द्र जंगल में रहकर सर्कस के लिए जानवरों को पकड़ने का काम करता है, किन्तु एक हथिनी के नवजात शिशु को पकड़ते समय हथिनी उस पर हमला करदेती है, बाद में बदलते घटनाक्रम के कारण नायक पश्चाताप करते हुए सभी जानवरों को मुक्त कर देता है और जंगल की खुशियां लौट आती हैं|**

**सन 1979 में आई धर्मेन्द्र, रेखा और विनोद खन्ना अभिनीत फिल्म ‘कर्तव्य’ में नायक फॉरेस्ट ऑफिसर बनकर शिकारियों, चंदन एवं हाथी दांत के तस्करों से लोहा लेकर पर्यावरण को बचाने में अपनी भूमिका निभाता है|**

**सन 1981 में आई ‘वारदात’ फिल्म में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए एक रासायनिक परीक्षण के असफल हो जाने के परिणामस्वरूप टिड्डियों के हमले के कारण किसानों को होने वाले नुकसान और जलवायु परिवर्तन की चर्चा हुई है, जिसे सरकार आतंकवादियों का काम मानकर इसकी जांच अपने सर्वश्रेष्ठ एजेंट गोपीनाथ उर्फ जी-9 (मिथुन चक्रवर्ती) को सौंपती है, जो जादुई बंदूक से इनका खात्मा करके किसानों को राहत पहुंचाता है| इस फिल्म के अधिक सफल न होने के कारण अगले कुछ वर्षों तक पर्यावरण पर आधारित फिल्में प्रायः नहीं बनती हैं|**

**सन 1999 में निर्देशक महेश मथाई 1984 की भोपाल गैस त्रासदी पर आधारित फिल्म ‘भोपाल एक्सप्रेस’ लेकर आते हैं और इस घटना के दुष्प्रभावों का लोमहर्षक अंकन करते हैं| इसके दो साल बाद आई आमिर अभिनीत आशुतोष गोवारीकर निर्देशित फिल्म ‘लगान’ में सूखे के कारण लगान न दे पाने की विवशता में किसानों को अंग्रेजों के साथ शर्त लगानी पड़ती है कि वे उनको उनके खेल क्रिकेट में अगर मात दे देते हैं तो उनका लगान माफ कर दिया जाएगा और अनेक नाटकीय पड़ावों के बाद गरीब किसान जीत हासिल करने में सफल रहते हैं, लेकिन इसे पूर्णतः पर्यावरण पर आधारित फिल्म नहीं माना जा सकता|**

**सन 2009 में आई फिल्म ‘तुम मिले’ सन 2005 में मुंबई मे आई भयानक बाढ़ पर आधारित थी, जिसमें दो बिछुड़े हुए प्रेमी बाढ़ के दौरान जीवित रहने के लिए संघर्ष करते हैं| अगले साल प्रदर्शित फिल्म ‘पीपली लाइव’ में सूखे के कारण किसान नत्था सरकारी कर्ज नहीं चुका पाता और जमीन छीने जाने से बचने के लिए उसका भाई उसे आत्महत्या करने के लिए उकसाता है|**

**‘दिल्ली सफारी’ सन 2012 में आई एक एनीमेशन फिल्म थी, जिसमें जंगल के जानवर मनुष्यों द्वारा उनके आवासीय जंगलों का विनाश किए जाने पर दुखी होकर संसद की ओर कूच करते हैं और दिल्ली आकर देश के प्रधानमंत्री तक अपनी बात पहुंचाते हुए सवाल करते हैं कि क्यों इंसान दुनिया का सबसे खतरनाक पशु बन गया है? अंत में प्रधानमंत्री पशुओं के रहने के लिए अलग स्थान उपलब्ध करा देते हैं और सभी जानवर खुशी-खुशी उसमें रहने लगते हैं| गोविंदा, अक्षय खन्ना, उर्मिला मातोंडकर, सुनील शेट्टी, प्रेम चोपड़ा, बोमन ईरानी जैसे बड़े कलाकारों द्वारा वॉयस ओवर किए जाने तथा इसका अंग्रेज़ी संस्करण भी बनाने के बावजूद यह फिल्म सफल नहीं हो सकी|**

**‘जल’ फिल्म सन 2014 में प्रदर्शित हुई थी, इस फिल्म में कच्छ के रण के सूखे की विभीषिका में पानी की तलाश में आने वाले प्रवासी फ्लेमिंगो पक्षियों के लिए अपने गाँव में जल की व्यवस्था करने की कशमकश करते व्यक्ति बक्का की कहानी कही गई है| पूरब कोहली के शानदार अभिनय से सजी इस फिल्म को ऑस्कर में भारत की ओर से भेजा गया था|**

**सन 2016 में टाइगर श्रॉफ, केके मेनन और जैकलीन फर्नांडीस अभिनीत फिल्म ‘ए फ्लाइंग जट्ट’ आती है, जिसमें फैक्ट्री के अपशिष्ट के कारण झील के प्रदूषित होने और जंगल को कटने से बचाने के लिए नायक जद्दोजहद करता है| अगले साल सन 2017 मे रिलीज हुई फिल्म ‘कड़वी हवा’ में दर्शाया गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण किस प्रकार बुन्देलखण्ड में सूखे की समस्या विकराल रूप ले रही है, जबकि ओडिशा के तटीय क्षेत्र अतिवृष्टि से पीड़ित हैं| इसी साल प्रदर्शित फिल्म ‘इरादा’ पंजाब के भटिंडा स्थित थर्मल प्लांट के आसपास बसे गांवों में कैंसर के रोगियों की बढ़ती संख्या और यूरेनियम प्रदूषण के कारण भूजल के दूषित हो जाने की सत्य घटना पर आधारित है| इसी वर्ष हर्षप्रीत कौर, शबाना आज़मी और मकरंद देशपांडे अभिनीत फिल्म ‘द विशिंग ट्री : कल्पवृक्ष’ प्रदर्शित हुई थी, जिसमें निर्देशिका मणिका शर्मा ने कुछ दोस्तों द्वारा सैकड़ों साल पुराने चमत्कारी शक्तियों से लैस वृक्ष को कटने से बचाने की जद्दोजहद को प्रदर्शित किया है| साल 2017 में ही अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर अभिनीत फिल्म ‘टॉयलेट एक प्रेम कथा’ प्रदर्शित होती है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छता अभियान से प्रेरित थी| इस फिल्म में रोचक ढंग से खुले में शौच के दुष्प्रभावों का अंकन करते हुए मध्य प्रदेश की एक महिला द्वारा ससुराल में शौचालय न बनने तक न आने की सच्ची घटना को पिरोया गया है| यह फिल्म सुपरहिट होती है और आने वाली फिल्मों के लिए प्रेरक का कार्य करती है|**

**इसके अगले साल सन 2018 में इसी विषय पर नीलमाधव पांडा की फिल्म ‘हल्का’ आती है, जिसमें एक बच्चा पिचकू अपने पिता के विरोध के बावजूद मुंबई के अपने स्लम में शौचालय की मांग करते हुए मंत्रालय तक पहुँच जाता है और अनेक अवरोधों का सामना करता है|**

**सुशांत सिंह और सारा अली खान की फिल्म ‘केदारनाथ’ का प्रदर्शन सन 2018 में हुआ था| यह फिल्म सन 2013 में उत्तराखंड, विशेषकर केदारनाथ धाम में आई भीषण बाढ़ और भूस्खलन की पृष्ठभूमि में बुनी प्रेम कहानी है, जो महत्त्वपूर्ण विषय लेने के बावजूद मुंबइया मसलों में उलझकर एक बेहतरीन फिल्म बनने से चूक गई| ‘2.0’ सन 2018 में ही प्रदर्शित रजनीकान्त और अक्षय कुमार की बेहतरीन फिल्म है, जिसमें मोबाइल फोन के विकिरण से पक्षियों के मरने की गंभीर समस्या की चर्चा की गई है| इसी साल आई फिल्म ‘मेरे प्यारे प्राइम मिनिस्टर’ में आठ साल का बच्चा कन्नू अपनी माँ के लिए शौचालय बनवाने का सपना देखता है और इसके लिए प्रधानमंत्री को पत्र लिखता है| इसी वर्ष प्रदर्शित हॉरर फिल्म ‘तुम्बाड़’ में प्रकृति के दोहन के मनुष्य के लोभ की पराकाष्ठा और इसके दुष्परिणाम की कथा बुनी गई है| ‘जंगली’ फिल्म सन 2019 में प्रदर्शित हुई थी, जिसमें नायक राज नायर (विद्युत जामवाल) एक अभयारण्य में हो रही हाथी दांत की तस्करी को रोकता है|**

**सन 2021 पर्यावरण आधारित फिल्मों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण वर्ष कहा जा सकता है क्योंकि इस वर्ष के पहले छह महीनों में ही ऐसी अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई हैं, जिनमें पर्यावरण संरक्षण को केंद्र में रखा गया है| ‘एक अंक’, ‘वनरक्षक’ और ‘शेरनी’ को इनमें गिना जा सकता है| ‘एक अंक’ फिल्म नदियों की दुर्दशा की करुण कहानी कहती है और एक व्यक्ति के अकेले प्रयासों से किस प्रकार एक नदी को स्वच्छ और निर्मल बनाया जा सकता है, इसकी चर्चा करती है| ‘वनरक्षक’ अभिनेता यशपाल शर्मा को केंद्र में रखकर निर्मित फिल्म है, जिसमें निर्देशक पवन कुमार शर्मा ने मशीनीकरण और आधुनिकीकरण की अंधी होड़ में पहाड़ों, विशेषकर हिमाचल प्रदेश में वनों की हो रही अंधाधुंध कटान एवं ज़रा सी असावधानी के कारण जंगलों में लग रही आग की समस्या पर प्रकाश डाला है| इस फिल्म में वृक्षों के कटने से हिमाचल प्रदेश की जलवायु में हो रहे बदलावों को एक वनरक्षक महसूस करता है और प्रकृति के संरक्षण के लिए आखिरी सांस तक लड़ता है| ‘शेरनी’ विद्या बालन की फिल्म है, जिसमें वन्यजीवों, विशेषकर बाघों के संरक्षण पर बात की गई है| यह फिल्म शिकारियों, नेताओं तथा अधिकारियों के अपवित्र गठजोड़ एवं मीडिया की निराशाजनक भूमिका को केंद्र में रखकर एक शेरनी और उसके दो शावकों को मरने से बचाने के लिए किए गए संघर्ष की कथा कहती है| इस फिल्म में बताया गया है कि मनुष्य के अंतहीन लालच के कारण किस प्रकार वन्यजीवों के चरागाह और रहवास तेज़ी से घटते जा रहे हैं और उन्हें भोजन के लिए मानव बस्तियों में आना पड़ रहा है, जो मनुष्यों तथा पशुओं दोनों के लिए ही खतरनाक है| इसके अतिरिक्त बीते 11 वर्षों से शेखर कपूर की बहुप्रचारित फिल्म ‘पानी’ भी बनने की बाट जोह रही है, जो पानी की समस्या पर केंद्रित होगी|**

**वेब सीरीज़ की दुनिया में नज़र दौड़ाएं तो सन 2019 में प्रदर्शित ‘द फैमिली मैन के पहले सीज़न के अंतिम भाग में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा दिल्ली में एक फैक्ट्री से ज़हरीली गैस छोड़े जाने की घटना दिखाई गई है, जिसे सन 2021 में प्रदर्शित इसके दूसरे सीज़न में बेहद हल्के-फुल्के ढंग से निपटाकर इसका पटाक्षेप कर दिया गया है| अतः इस घटना को इस सीरीज़ की प्रधान पर्यावरणीय चिंता की कथावस्तु नहीं माना जा सकता| इसके अतिरिक्त वर्ष 2019 में ही एक अन्य वेब सीरीज़ ‘हवा बदले हस्सू’ प्रदर्शित हुई थी, जिसमें पर्यावरण संरक्षण के लिए जीवन शैली में बदलाव की वकालत की गई है और प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने के लिए लोगों को जागरूक किया गया है| निर्देशक सप्तराज और शिवा ने जलवायु परिवर्तन और विज्ञान थ्रिलर का मसाला इस सीरीज़ में इतनी कुशलता से मिश्रित किया है कि गेल इण्डिया के सहयोग से निर्मित यह सीरीज़ अपने जलवायुविक संरक्षण के संदेश को प्रसारित करने में सफल सिद्ध होती है| फिल्मकार नीलमाधव पांडा ने भी हाल ही में पर्यावरण संरक्षण पर एक वेब सीरीज़ बनाने की घोषणा की है|**

**इनके अलावा बीते कुछ वर्षों में पर्यावरण संरक्षण को केंद्र में रखकर अनेक वृत्तचित्र बनाए गए हैं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोहरत बटोरी है| साल 2019 में नई दिल्ली मे आयोजित हुए सीएमएस फिल्म फेस्टिवल की थीम ‘हिमालय’ थी, जिसमें 60 देशों की एक हजार से अधिक फिल्मों में से 77 को प्रदर्शन हेतु चुना गया था | इसी वर्ष निर्मित ‘शिखर से पुकार’ वृत्तचित्र जल संरक्षण और माउंट एवरेस्ट पर बढ़ रहे प्रदूषण की कथावस्तु पर आधारित था| वर्ष 2021 में राहुल जैन द्वारा निर्मित वृत्तचित्र ‘इनविजिबल डीमन्स’ दिल्ली में सूक्ष्म कणों के कारण फैल रहे वायु प्रदूषण पर आधारित है| दिल्ली तथा इसके आसपास के क्षेत्रों मे विगत कुछ वर्षों में बढ़ते स्मॉग की भयावहता को यह वृत्तचित्र स्थिर चित्रों एवं सचल चित्रों के माध्यम से महसूस कराने में सफल रहा है| इस वृत्तचित्र को अमेरिकी फिल्म ‘स्टीलवाटर’, फ्रांसीसी फिल्म ‘द क्रूसेड’ तथा वृत्तचित्रों ‘अबव वाटर’, ‘एनीमल’, आइ एम सो सॉरी’, ‘बिगर दैन यूएस’ और ‘ला पैन्थर डेस नी’ के साथ 06 से 17 जुलाई 2021 के मध्य आयोजित होने वाले केन्स फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शन हेतु चुना गया है|**

**स्पष्ट है कि हिन्दी फिल्म और वेब सीरीज़ की दुनिया में पर्यावरण संरक्षण जैसे ज़रूरी विषय पर फिल्म बनाने में अभी हिचक बरकरार है| अधिकांश फिल्मकार इसे गौण कथा के तौर पर जोड़कर आगे बढ़ जाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि पर्यावरण संरक्षण तथा जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दे पर बना सिनेमा या वेब सीरीज़ अपनी लागत नहीं निकाल सकेगा, किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि भारतीय पर्यावरणीय मुद्दे पर वर्ष 2009 में बनी ‘अवतार’ जैसी फिल्म को भारत समेत पूरी दुनिया में बेहद पसंद किया जाता है और यह फिल्म ‘टाइटेनिक’ को पीछे छोड़कर दुनिया की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन जाती है| अतः आवश्यक है कि हिन्दी फिल्मकार सिनेमा, टीवी धारावाहिक, वेब सीरीज़, शॉर्ट फिल्म तथा वृत्तचित्र आदि विधाओं के माध्यम से पर्यावरण के क्षेत्र में मानव द्वारा किए गए गैरज़रूरी दखल की देश-दुनिया में फैली असंख्य कहानियों को परदे पर उकेरें और दर्शकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने की अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करें, ताकि हम सब स्वस्थ पृथ्वी, आरोग्यप्रदायक वनस्पतियाँ, निर्मल जल, स्वच्छ हवा, स्वच्छ अंतरिक्ष और स्वच्छ वातावरण आने वाली पीढ़ी को सफलतापूर्वक सौंप सकें|**

* **डॉ. पुनीत बिसारिया, अध्यक्ष-हिन्दी विभाग,**

**बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश 284 128**